International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070
Impact Factor: RJIF 5.22
www.socialsciencejournal.in
Volume 4; Issue 4; July 2018; Page No. 89-92

चित्रकूट धाम : तीर्थ यात्रा एवं पर्यटन का ऐतिहासिक विकास का अध्ययन

डॉ० जितेन्द्र सिंह
सहायक प्राध्यापक भूगोल, विन्ध्यांचल महाविद्यालय, जिगना, सतना, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
यात्रा एक विस्तृत शब्द है, जिसका अर्थ युद्ध, तीर्थ, ज्ञान, शिक्षा, मनोरंजन आदि कारणों से एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने की प्रक्रिया है। यात्रा की प्रकृति व उद्देश्य कई हो सकते है। यात्रा की कई अवस्थायें है उनमें तीर्थ यात्रा एवं पर्यटन इत्यादि यात्रा की विशिष्ट अवस्थायें या प्रकार है। जहाँ यात्रा शब्द का प्रयोग विस्तृत अर्थ में किया जाता है, वहीं तीर्थ यात्रा व 'पर्यटन' कम विस्तृत शब्द है। चित्रकूट स्थिति सम्पूर्ण विन्ध्य प्रदेश में अनेक गुप्त कालीन मंदिरों के अवशेष प्राप्त हुए है। इन मंदिरों में शिव एवं पार्वती की मूर्तियां पाई गई है। कुछ मंदिरों में शिवलिंग प्राप्त हुए है। निश्चित ही इन मंदिरों में धार्मिक लोग आते जाते रहे होगें। इस तरही ईसा की पहली सदी में पूर्व से लेकर वर्तमान तक कई महत्वपूर्ण शिलालेख एवं अवशेष प्राप्त हुए है। जिसमें चित्रकूट धाम का तीर्थ यात्राओं का पता चलता है। चन्देल कालीन एवं कल्चुरी कालीन मंदिरों से शिलालेख भी इस बात की पुष्टि करते हैं कि सम्पूर्ण प्रदेश में तीर्थ यात्राओं का प्रचलन था तथा लोग दैव स्थान को पवित्र मानते थे। चित्रकूट एक ऐसा आरण्य तीर्थ है जो अपने प्राकृतिक महत्व के साथ ही आध्यात्मिक महिमा और नैशर्गिक सुषमा के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ प्रतिदिन हजारों की संख्या में तीर्थ यात्री एवं पर्यटक इस पावन भूमि के दर्शन हेतु आते है।

मूल शब्द : चित्रकूट धाम, तीर्थ यात्रा, पर्यटन, ऐतिहासिक विकास, वैदिक युग।

प्रस्तावना
तीर्थ एवं यात्रा दो शब्दों से मिलकर बने है। 'तीर्थ' शब्द की व्युत्पत्ति 'ति'(तीन) 'र्थ' (अर्थ) से हुई है। विद्वानों के अनुसार संसार में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चार पदार्थ है। जिनमें अर्थ (धन) तीर्थ यात्रा में खर्च होता है और शेष तीन पदार्थो की सिद्धि को तीर्थ कहते हैं।[1]

तीर्थ को दूसरे शब्दों में कह सकते है कि "संसार एक भवसागर है जिसको पार करने के लिए तीर्थ एक साधन है। तीर्थ का अर्थ है – पवित्र करने वाला। सामान्यतः उस नदी, सरोवर, मंदिर अथवा स्थल को भी तीर्थ कहते हैं जहाँ ऐसी दिव्य शक्ति हो कि उसके सम्पर्क में आने पर मनुष्य के पाप अज्ञात रूप से नष्ट हो जाते है। संक्षेप में धर्म, अर्थ तथा काम की सिद्धि को ही तीर्थ कहते हैं।"

यात्रा का जीवन से अविच्छिन्न सम्बन्ध है जीवन गत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मानव सदा ही बड़े–बड़े पर्वत, घनघोर, जंगलों और जलते तपते हुए रेगिस्तानों की यात्रा करता रहा है।[2] सामाजिक व्यवस्था कैसी भी रही हो, समाज कैसे भी रहा हो, यहां तक कि प्राणी वर्ग का कोई भी समाज हो, बिना यात्रा के जीवन चल सकना संभव नहीं है। जैविक विकास को अधार मानकर यदि यात्रा के विकास पर ध्यान दिया जाये तो जीव की उत्पत्ति की प्रारंभिक अवस्था से लेकर (एक कोशीय जीव) पूर्ण विकसित मानव की स्थिति तक पहुंचने के क्रम में भी यात्रा जीवन के साथ चलती रही है।[3]

देशकाल, समय व परिस्थितियों के साथ–साथ यात्रा का स्वरूप तथा अर्थ भी परिवर्तित होता रहा है। आदिम मानव जहाँ सुधा की शान्ति के लिए यात्रा करता था, शनैः शनैः विकास की प्रक्रिया के साथ मानव धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, भौगोलिक, जैविक और औद्योगिक व वैज्ञानिक कारणों ने यात्रा प्रारंभ किया। वैदिक कालीन सभ्यता में यात्रा काफी प्रचलित थी। इस काल में यात्रा का उद्देश्य सैर, आनन्द, ज्ञान तीर्थ आदि थे। इसी काल में तीर्थ यात्रा का प्रचलन तीव्र गति से हुआ।[4] मध्ययुग में आते–आते यात्रावृत्ति में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ और यात्रा का कारण सैर, मनोरंजन, ज्ञान आदि कारण बने। वर्तमान वैज्ञानिक युग में जबकि कार्य कारणों के सम्बन्धों के आधार पर प्रत्येक वस्तु का विश्लेषण किया जाता है। यात्रायें व यात्रावृत्ति को पर्यटन के रूप में भी माना जाने लगा।[5]

तीर्थ यात्रा मानव के मानसिक विकास के क्रम में, जब प्राकृतिक घटनाओं, प्रकृति की अजेय शक्तियों तथा गूढ़ रहस्यों को समझने में उसने अपने आपकों असमर्थ पाया तो उसने इस दिशा में चिंतन प्रारंभ किया और ऐसी तमाम बातों को एक अज्ञात, अजेय, अदृश्य शक्ति मानकर ईश्वरीय रूप में स्वीकार किया। प्रत्येक उस कारण को जिसका अर्थ निराकरण मानव मस्तिष्क से बाहर या उसे उसने ईश्वरीय रूप देकर उसके प्रति समर्पण, निष्ठा और आदर भाव दिया, यहीं चिंतन का क्रम कालांतर में 'ईश्वर–भगवान' के रूप में उभर कर आया।[6]

आरंभ में कई प्रकृति शक्तियों, बीमारियाँ मानव के लिए जानलेवा शक्ति हो रही थी उस समय भयाकुल मानव ने आदृश्य शक्ति को सर्वशक्तिमान मानकर उसकी पूजा अर्चना आरंभ कर दिया, उसका मानना था कि पूजा अर्चना द्वारा ऐसी शक्तियों से शान्ति प्राप्त की जा सकती है। इस तरह मृत्यु के भय ने मानव को इस दिशा में चिंतन के लिए बाध्य किया। नाना प्रकार की ब्याधियों, रोगों के निवारण में मानव सफल भी हुआ किन्तु अन्त में इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि मृत्यु अवश्य सभावी है। फिर भी वह मृत्यु व जीवन का चिंतन छोड़ा नही। उसे यह भी विश्वास हो गया कि मनुष्य शरीर पंच तत्वों से बना है, उसका यह शरीर नश्वर है किन्तु आत्मा अमर है। जिस प्रकार शरीर दैनिक जीवन में पुराने वस्त्रों को त्याग कर नये वस्त्रों को धारण करता है उसी प्रकार आत्मा भी पुराना शरीर छोड़कर नया शरीर धारण करती है।[7]

तीर्थ यात्रा के महत्व को हिन्दू धर्म ग्रन्थों में भी कई प्रकार से वर्णित किया गया है। इस आधार पर तीर्थ यात्रा का अर्थ काफी स्पष्ट हो जाता है। "कोई भी यात्रा जो कि तीर्थ (देवस्थान, प्राकृतिक स्थल, पवित्र सरोवर, मानव निर्मित स्थान या पवित्रता देने

वाली) को किसी प्रयोजन के लिए की जाती है, तीर्थ यात्रा कहलाती है। तीर्थ यात्रा एक निश्चित पद्धति के अनुसार की जाती है।[8]

'तीर्थयात्रा' तीर्थ + यात्रा शब्दों का योग है जिसका सामान्य अर्थ तीर्थ की यात्रा है। 'पर्यटन' मानव ज्ञान के साथ–साथ यात्रावृत्ति में बदलाव आया। जैसे–जैसे मानव ज्ञान का विकास होता गया यात्रावृत्ति बदलती गई। आदि मानव जहाँ छुधा की शान्ति, सुख व सेक्स के लिए यात्रा करता था, मध्य युग तक पहुंचते–पहुंचते यात्रा के कई उद्देश्य हो गये। धार्मिक कारणों, युद्धादि के कारण की जाने वाली प्राचीन यात्रायें अब ज्ञान, नई चीजों का पता लगानें, व्यापार व मनोरंजन के लिए की जाने लगी।

वास्गोडिगामा, कोलम्वस, मार्कोपोलो, ह्वेसांग, वनियर आदि की यात्रायें इसी प्रकार की यात्रायें थी। यात्राओं के इसी क्रम में यात्राओं का एक नया रूप पर्यटन बन कर उभरा। इसकी शताब्दी में पर्यटन को यहां एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने, यात्रा करने के लिए प्रयोग किया जाता था।[9] प्राचीन काल से धार्मिक यात्राओं का प्रचलन सभी धर्मो में विद्यमान था किन्तु 19वीं शताब्दी के आरंभिक वर्षो में अंग्रेजी साहित्य के कुछ विद्वानों ने प्रकृति प्रेम की दुन्दभी बजाई जिसने सारे यूरोप में एक नया आयाम व दिशा का दिग्दर्शन किया।[10]

इन विद्वानों ने अपने देश व संसार के लोगों में अपने विचारों, कृतियों से प्रकृति प्रेम का नया दृष्टिकोण दिया। प्राकृतिक सौन्दर्य व प्रकृति वर्णन से ओत–प्रोत उनके ग्रन्थों में अल्पस की वादियों, रंग विरंगें पुष्पों, पशु पक्षियों, आकाशीय नक्षत्रों, दिन–रात, सुबह–शाम आदि घटनाओं के प्रति मानवीय प्रेम भावनाओं को जागृति किया। इस भावना ने यात्रावृत्ति को और अधिक प्रोत्साहित किया और 20वीं शदी में यात्राओं को कारकों में यह विचार एक अहम कारक बनकर सामने आया और उत्पन्न हुआ। मनोरंजन, प्रकृति दर्शन आदि को लोग आम भाषा में टूरिज्म के रूप में प्रयोग करने लगे और पर्यटन का विकास धीरे–धीरे पूरे विश्व में छा गया। इस तरह यात्रा व पर्यटन का परस्पर घनिष्ट सम्बन्ध है। संक्षेप में यदि कहें तो पर्यटन यात्रा की ही एक विशिष्ट अवस्था है।

वैसे तो पर्यटन केवल यात्रा तक ही सीमित नहीं बल्कि यह विस्तृत शब्द है और इस शब्द का जन्म 18वीं शदी में पर्यटकों की बढ़ती हुई संख्या के बाद हुआ। 19वीं सदी तक विद्वानों ने इसे एक व्यवसाय का रूप देने की सोची, क्योंकि इसमें पूंजी अर्जित करने का संसाधन, दृष्टिगोचर हो रहा था। 20वीं सदी तक पहुंचते–पहुंचते पर्यटन व्यवसाय यूरोप में बहुत अधिक लोकप्रिय हो गया। वर्तमान में पर्यटन विश्व में एक प्रमुख उद्योग के रूप में उभरा है।

चित्रकूट क्षेत्र में तीर्थ यात्रा एवं पर्यटन का विकास

चित्रकूट क्षेत्र में प्राचीन समय से प्रचलित तीर्थ यात्रा एवं वर्तमान में पर्यटन के स्वरूप, यहां के तीर्थ यात्रा एवं पर्यटन विकास को निम्न भागों में बाँट कर अध्ययन किया जा सकता है–

पूर्व वैदिक युग

ऋग्वेद आर्यों का सबसे प्राचीन धर्म ग्रन्थ है जिसमें हमें आर्यों की सामाजिक, धार्मिक स्थिति का पता चलता है। ऋग्वेद हमें यात्रा सम्बन्धी बातों की विस्तृत सूचना देता है। इसमें समुद्री यात्रा, व्यापार यात्रा, धर्म यात्रा तथा मनोरंजन के लिए की गई यात्रा के कई प्रसंग देखने को मिलते है। वैदिक काल को दो भागों में बांटा जा सकता है–

(अ) पूर्व वैदिक काल – इस काल के अन्तर्गत ऋग्वेद की रचना के पूर्व का समय लिया जाता है। चित्रकूट क्षेत्र भारत वर्ष के मध्य में स्थित है। यहाँ आर्यों का आगमन के पूर्व कई आदिम जातियां आवाद थी, जिनमें कोल, किरात, भील, सवर आदि थे।[11] ऐसी मान्यता है कि ईश्वर के आकार हीन रूप की कल्पना तथा पुर्नजन्म की कल्पना का श्रेय इसी जाति को जाता है यह चित्रकूट क्षेत्र की प्राचीनतम जातियाँ थी।

मानव ज्ञान या मानसिक विकास की उस अवस्था तक वह जाति पहुंच चुकी थी, जहाँ पर मानव ने अविजित प्राकृतिक शक्तियों, बीमारियों, भयानक जीव जन्तुओं से भयभीत होकर यह निश्चय कर लिया था कि ऐसी भी अदृश्य शक्तियाँ ईश्वर है जिन्हें पूजा या उपासना द्वारा प्रसन्न किया जा सकता है। इन अदृश्य शक्तियों को प्रसन्न करने के लिए वह पूजा व उपासना जैसे कार्य करने लगा। कई विद्वानों का मानना है कि नाग या भैसासुर की पूजा जो इस क्षेत्र में प्रचलित है का श्रेय भी इस जाति को मिलना चाहिए। चित्रकूट क्षेत्र के आदिवासी व पिछड़ी जातियों में नाग की पूजा, सिंह की पूजा आदि भयानक प्राण घातक जन्तुओं की पूजा अर्चना आज भी विद्यमान है क्योंकि आरंभ में मानव ने ऐसे ही प्राणलेवा शक्तियों का आकार देना प्रारंभ किया था। उपरोक्त मतों से यह स्पष्ट होता है कि चित्रकूट अंचल में पूजा अर्चना आदि कृत्यों के लिए छोटी यात्राएँ की जाती रही होगी जिन्हें की तीर्थ यात्रा माना जा सकता है।

(ब) वैदिक युग

(1) पूर्व वैदिक काल – ऋग्वेद में गंगा नदी का वर्णन आया है। उक्त वर्णन से पता चलता है कि आर्यों को गंगा की जानकारी काफी देर से हुई क्योंकि गंगा का वर्णन ऋग्वेद के आखिरी मंडलों में हुआ है। अर्थात जब चित्रकूट क्षेत्र के उत्तर में स्थित गंगा यमुना के मैदानों पर सभ्यता का काफी विस्तार हो चुका था उन्हें चित्रकूट प्रदेश की जानकारी बहुत कम है। रामायण व महाभारत के प्रसंगों में भी इस बात की पुष्टि होती है कि महर्षि वशिष्ट विश्वामित्र इस प्रदेश में आये थे के समय तक कोल, भील, किरात, खस जातियाँ निवास करती थी। इस काल में तीर्थ यात्रायें पूर्ववत चलती रही।

(2) उत्तर वैदिक काल – ऋग्वेद की रचना के बाद ब्राहम्ण ग्रन्थों, उपनिषदों, अरण्यकों तथा अन्य वेदों की रचना के समय को इस काल के अन्तर्गत लिया गया है। पूर्व वैदिक काल के बाद इस क्षेत्र की धार्मिक स्थिति में पर्याप्त अन्तर आया। लोगों का ध्यान प्राचीन देवताओं की जगह विशाख वैष्णों आदि देवताओं की ओर बढ़ गया। वीर पुरुषों, नारियाँ, वृक्षों एवं जानवरों में भी देवता की कल्पना की जाने लगी थी।[12]

सामान्यतः जानवरों व वृक्षों की पूजा आर्यों ने पूर्व जातियों से ली गयी होगी क्योंकि पूर्व की जातियाँ भी गौ, पीपल आदि की पूजा करते थे। कुछ विद्वानों की मान्यता है कि मानवता की लहरे ईसा से तीन हजार वर्ष पूर्व यानी आरंभ हो गयी थी जो कि विन्ध्यन श्रेणी में स्थित चित्रकूट क्षेत्र में फैली थी। इनका सम्बन्ध कोल, भील से भी जोड़ा गया है। उत्तर वैदिक काल के ग्रंथो से पता चलता है कि उस समय तक नदियों के प्रति पूज्य भावना विकसित हो चुकी थी तथा पवित्र नदियाँ गंगा यमुना के तटों पर ऋषि लोग आश्रम बनाने लगे थे और लोग आशीर्वाद प्राप्ति की इच्छा से ऐसे स्थानों की यात्रा करने लगे थे। यहीं यात्रा का सम्भवतः यहीं पर जन्म हुआ। आर्यों व उसकी पूर्वोत्तर जातियों के सम्पर्क से हिन्दू जाति बनी। ईसा की सातवी सदी पूर्व हिन्दुओं में एक नई धार्मिक चेतना उत्पन्न हुई। ज्ञान प्राप्ति करने की इच्छा से वे इधर उधर

भ्रमण करते थे। शायद कि आर्यों का वर्ण व्यवस्था तथा आश्रम व्यवस्था का परिणाम रहा होगा। अपने जीवन में अन्तिम समय में व्यक्ति जब वानप्रस्थ आश्रम में जाता था उस व्यवस्था में घर त्यागकर भिक्षायापन करते हुए पवित्र तीर्थ स्थानों की खोज करता हुआ वह उन स्थानों की तीर्थ यात्रा करता था। चित्रकूट प्रदेश में वनों की प्राकृतिक गुफाएँ, पीने के लिए नदियों का स्वच्छ जल, खाने के लिए जंगली कंदमूल एवं फल, आनन्द के लिए प्राकृतिक नैसर्गिक छटा तथा चिंतन के लिए सान्त व स्वच्छ हवा प्रदान करता था। इसलिए इस प्रदेश में कई ऋषियों, मनीषियों, एवं ज्ञानियों ने अपनी साधना स्थली बनायी, जो कि आश्रमों के रूप में विकसित हुए और कालान्तर में शिक्षा के महत्वपूर्ण केन्द्र बन गये। चित्रकूट क्षेत्र में ऐसे कई ऋषियों के आश्रम, मंदिर, गुफाएँ, नदी पर्वत आज भी स्थित है जिनमें तीर्थ यात्रायें प्रचलित हैं।

महाकाव्य काल में तीर्थ यात्रा एवं पर्यटन विकास

चित्रकूट क्षेत्र में तीर्थ यात्रा का प्रचलन प्राचीन काल से ही आरंभ हो गया था जिसके प्रमाण हमें वैदिक साहित्य में देखने को मिलते है। यहाँ कि पवित्र नदियों एवं आश्रमों तक फल एवं सेवा प्राप्ति की इच्छा से यात्रा करने वाले प्रसंग भी मिलते है।[13] रामायण एवं महाभारत जैसे महाकाव्यों में भी चित्रकूट क्षेत्र से सम्बन्धित कई प्रसंग आये है। महाभारत के वन पर्व में भी विन्ध्यन की यात्रा का विस्तृत वर्णन है। जनश्रुतियों, रिवाजों तथा संस्कृति पर आदि दृष्टिपात किया जाय तो प्रतीत होता है कि महाकाव्यों के रचयिता व पात्र इस क्षेत्र में अच्छे जानकार थे। सती अनुसुइया की तपस्या से यहाँ की पुण्य सलिला मंदाकिनी प्रवाहमान हुई और इस क्षेत्र को अभिसिंचित किया। रामायण कालीन घटनाओं को इस क्षेत्र से बहुत अधिक सम्बन्धित बताया गया है। इस क्षेत्र में स्थिति कामदगिरि भगवान राम की शरण स्थली थी। लक्ष्मण पहाड़ी पर लक्ष्मण जी वीरासन में भगवान राम एवं सीता जी की रात्रि के समय रखवाली करते थे। ऐसे प्रसंग से सम्पूर्ण रामायण भरा पड़ा है।

पुराण काल

पुराणों में भी विन्ध्यांचल स्थित चित्रकूट तीर्थ यात्रा के प्रसंग मिलते है। गंगा महात्म तो पुराणों में इतना अधिक भरा पड़ा है कि प्रतीत होता है कि पुराण सम्भवतः गंगा महात्म के लिए ही रचे गये हो। हमारे अध्ययन की दृष्टि से पुराण बहुत महत्वपूर्ण साबित होते है। पुराण में कहा गया है कि स्वर्ग की प्राप्ति के लिए मानव को चाहिए कि वह महापंथ की यात्रा करें। धैर्य, धर्म, सत्यवचन तथा आत्मा की खुशी से जो तीर्थ यात्रा करता है उसे स्वर्ग की प्राप्ति होती है। इस प्रदेश में भगवान राम की यात्रा का वर्णन व अन्य कई प्रसंग चित्रकूट क्षेत्र से जुड़े हुए है जो साबित करते है कि तीर्थ यात्रा इस प्रदेश में धीरे धीरे बढ़ रही थी। इस पुराण में तीर्थ यात्रा को बहुत अधिक महत्व दिया गया है। अतः कहा जा सकता है कि चित्रकूट धाम की तीर्थ यात्रा भी प्रचलित रही होगी।

पद्मपुराण के अनुसार मंदाकिनी के तट पर श्राद्ध करने से गया में पिण्डदान करने से पितृों की मुक्ति होती है।[14] भागवत पुराण में भी इस क्षेत्र की यात्रा का वृतांत मिलता है। गरुण पुराण में पयस्वनी नदी का उद्धरण मिलता है जो इसी क्षेत्र में प्रवाहित होने वाली एक नदी है। इसके तीर्थों की महिमा इस पुराण में वर्णित है।

उक्त पौराणिक वृतान्तों से हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते है कि पौराणिक काल में जब तीर्थों का अत्यधिक महत्व बढ़ गया था तो चित्रकूट धाम एक महत्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में प्रचलित हुआ। इस समय तक प्रकृति की सुन्दरता में भी ईश्वरत्व की कल्पना की जा चुकी थी और अत्यधिक प्रचलित थी। इस काल में तीर्थयात्रा का मुख्य उद्देश्य मोक्ष प्राप्त करना था। प्रायः वनप्रस्थ तथा सन्यास आश्रमों में लोग इस क्षेत्र में आते थे। यहाँ के प्रमुख तीर्थो में कामदगिरि, सती अनुसुइया, गुप्त गोदावरी, भरतकूप, लक्ष्मण पहाड़ी आदि थे।

प्राचीनकाल में तीर्थ यात्रा एवं पर्यटन

प्राचीनकाल में चित्रकूट क्षेत्र की तीर्थयात्रा के प्रसंग हमें जैन, बौद्ध, शुंग, शक, कुषाण, गुप्त, हर्ष तथा पूर्व मुगलकाल तक के साहित्य साक्ष्यों से उपलब्ध होते है। जैन धर्म में आर्य तीर्थन्कर ऋषभदेव हुए है जिन्हें आदिनाथ भी कहा जाता था जो अयोध्या के इक्ष्वाकुरुवंशी राजा नाभि के पुत्र थे। ऋषभदेव के पुत्र भरत चक्रवर्ती हुए जो उत्तर के देशों को जीतते हुए गंगोत्री तक पहुंचे थे तथा दक्षिण में स्थित विन्ध्य भूभाग पर अपना शासन किया था। चित्रकूट स्थित सतना जिले में जैन धर्मावलम्बियों के कई प्राचीन मंदिर भग्नावशेष अवस्था में मिले है किन्तु विद्वानों की मान्यता है कि ये मंदिर काफी बाद के बने है।

तिब्बती बौद्ध गाथाओं के अनुसार जब भगवान बुद्ध कपिल वस्तु में अपने पिता का अतिथ्य स्वीकार कर रहे थे उस समय उन्होंने अपने बाल और नाखून शाम्यक नामक शाम्य को देकर बागुड़ देश के लिए भेजा। इस समय ये भू–भाग वत्स्य जनपद का एक भू–भाग था। जिसकी स्थिति वर्तमान में चित्रकूट से दक्षिण सतना जिले में नरो पहाड़ व भरहुत पर्वत के मध्य मानी गयी। इस प्रकार बौद्ध परम्परा में भी चित्रकूट धाम के दक्षिण में स्थित सतना नगर बरदावती नामक नगर के रूप में वर्णित है।[15]

मध्यकाल में तीर्थयात्रा एवं पर्यटन का विकास

पूर्व मध्यकाल (650 ई. से 900 ई.) तथा उत्तर मध्यकाल (900–1200 ई.) में इस प्रदेश में राजाओं के आक्रमण व युद्ध परस्पर होते रहे। फिर भी यहाँ तीर्थ यात्रा पूर्ववत चलती रही। इस दिशा में कई धर्मों की तीर्थ यात्रायें प्रचलित रही है। लेकिन वैष्णव, शैव तथा शाक्त सम्प्रदाय ने तीर्थ यात्राओं को जितना बढ़ावा दिया उतना किसी अन्य सम्प्रदाय ने नहीं दिया।

अफ्रीका पर्यटक इब्नवतूता जो मोहम्मद तुगलक (1325) के राज्यकाल में 14 वर्षों तक भारत रहा, उसने इस प्रदेश का वर्णन किया है। उसके वर्णन से यह भी पता चलता है कि इस क्षेत्र में बौद्ध, जैन, हिन्दू एवं मुस्लिम धर्म के अनुयायी थे और वे सभी अपने देवी देवताओं को मानते थे तथा तीर्थ यात्राएँ करते थे। इस काल के मंदिर विन्ध्य प्रदेश के गुर्गी, महसांव, कालिंजर आदि स्थित है। सतना जिले में इस काल के मन्दिर चित्रकूट, जसो, मैहर, मड़ई, भाद, भुमकहर, भटनवारा, भूमरा, बाबूपुर, रामपुर आदि में पाये गये है। इन मंदिरों में धार्मिक श्रद्धालु जनों के यात्रा करने के प्रमाण मिलते है।

आधुनिक काल में तीर्थयात्रा एवं पर्यटन

आधुनिक काल 1700 से आज तक का माना जाता है। मुगलकाल में मुसलमान बादशाहों द्वारा हिन्दुओं के तीर्थ स्थलों पर प्रहार किया गया। कई हिन्दुओं ने प्राण रक्षा के लिए इस प्रदेश में शरण ली। अपने साथ वे अपने निजी देवी देवताओं तथा संस्कृति आदि को भी लेकर आये। फलस्वरूप जहाँ पहले से ही इस क्षेत्र में कई मत मतान्तर थे, उनकी संख्या में और वृद्धि हो गई।

निष्कर्ष

अंग्रेजी हुकूमत के आने के बाद अंग्रेजों ने इस प्रदेश में अपना पैर फैलाना शुरू किया। कई अंग्रेज अधिकारियों का एक–एक करके

आगमन हुआ। एक अंग्रेज ने इस क्षेत्र का भ्रमण किया तथा वहाँ की सुन्दरता का बयान किया है। इस क्षेत्र में स्थिति नदी को विश्व की सुन्दरतम नदी की सुन्दरता प्रदान की है। तत्पश्चात् कई राजाओं, अंग्रेज अधिकारी ने इस क्षेत्र में शिकार करने तथा प्राकृतिक सौन्दर्य का आनन्द लेने के लिए यात्रा की है। इसका वृतांत हमें रीवा राज्य की पुस्तकों में देखने को मिलता है। रीवा राज्य दर्पण के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि यहाँ के अधिकांश बघेल राजा बड़े बहादुर एवं धर्मप्रिय थे। यहाँ के महाराजा विश्वनाथ सिंह, व्यंकटरमण सिंह, रघुराज सिंह, गुलाब सिंह एवं मार्तण्ड सिंह ने अपने शासन के दौरान इस क्षेत्र की कई तीर्थ यात्राएँ की थी। इस तरह तीर्थ यात्रा का प्रचलन इस प्रदेश में जो पूर्व वैदिक काल से आरंभ हुआ था वह आधुनिक काल तक देखने को मिलता है।

तीर्थ यात्रा चित्रकूट धाम में प्राचीन काल से प्रचलित रही है। देश काल व सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, भौगोलिक आदि परिस्थितियों के कारण इसमें बदलाव आया है। अंग्रेजों के आगमन के बाद यहाँ के यात्रावृत्ति में पर्यटन का दृष्टिकोण तेजी से पनपा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् विशेषकर पिछले 20 वर्षो में नये पर्यटन का जन्म हुआ है। भले ही चित्रकूट क्षेत्र में नये पर्यटन की अवधारणा बहुत सूक्ष्मावस्था में है लेकिन फिर भी यह भावना तेजी से बढ़ रही है।

इस क्षेत्र में तीर्थ यात्राएँ आज भी विद्यमान है और उनका धार्मिक भाव पूर्णतया समाप्त नही हुआ है लेकिन नये पर्यटन ने तीर्थ यात्राओं पर अपना प्रभाव डाला है। इस क्षेत्र में जहाँ प्राचीन समय में केवल तीर्थ यात्री ही आते थे वहीं आज तीर्थ यात्रियों के साथ–साथ बड़ी संख्या में देशी व विदेशी पर्यटक भी यहाँ की प्राकृतिक छटा का आनन्द लेने के लिए आते है। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि देश काल परिस्थिति के अनुसार यहाँ की तीर्थ यात्राएँ परिवर्तित हुई हैं और वर्तमान समय में तीर्थ यात्राएँ पर्यटन की ओर झुक रही है।

सन्दर्भ

1. कल्याण तीर्थांक, वर्ष 31, भाग 1, गीता प्रेस गोरखपुर, पृ. 612.
2. माथुर, सुरेन्द्र, यात्रा साहित्य का उद्‌गम और विकास, संहिता प्रकाशन, मालीवाड़ा, पृ.25.
3. माथुर, सुरेन्द्र, यात्रा साहित्य का उद्‌गम और विकास, संहिता प्रकाशन, मालीवाड़ा, पृ.26.
4. डबराल, शिव प्रसाद, उत्तराखण्ड यात्रा दर्शन, पृ. 120–121.
5. माथुर, सुरेन्द्र, यात्रा साहित्य का उद्‌गम और विकास, संहिता प्रकाशन, मालीवाड़ा, पृ.1–11.
6. शास्त्री, मंगलदेव, भारतीय संस्कृति का विकास, भारतीय ज्ञान पीठ, सनुमति वाराणसी, पृ. 104–117
7. पोछार, हनुमान प्रसाद, तत्व चिंतामणि, गीता प्रेस, गोरखपुर
8. हिन्दू धर्म, मुस्लिम धर्म, बौद्ध धर्म, ईसाई धर्म आदि में प्रचलित तीर्थ यात्राओं की निश्चित पद्धति है जो कि धार्मिक रूप से एवं सामाजिक रूप से मान्य है।
9. यंग, जार्ज (1970) टूरिज्म ब्लैसिंग एण्ड ब्लाइट, बैलग्वइन बुक्स, हामोन्टुस वर्थ, इग्लैण्ड, पृ. 10–11.
10. रन्धावा, एम.एस. (1975) ट्रवल्स इन द वेस्टर्न हिमालय, थामसन प्रेस, नई दिल्ली, पृ. 1–12.
11. मजूमदार, डी.एन., रेशेज एण्ड कल्चर ऑफ इण्डिया.
12. रस्तोगी, डी.पी., प्राचीन भारत, पृ. 5–50.
13. रस्तोगी, डी.पी., प्राचीन भारत, पृ. 57.
14. पद्यपुराण, श्रृष्टि खण्ड, अध्याय 11 व उत्तराखण्ड, अध्याय 2 स्वर्ग खण्ड, 1–6.
15. सिंह, अरुणा, विन्ध्य प्रदेश के धार्मिक पर्यटन केन्द्रों का भौगोलिक अध्ययन, पृ. 97.